2 जनवरी 2020, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे जिनवाणी चैनल पर

प्रतिदिन

प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 42, अंक : 19
जनवरी (प्रथम), 2019 (वीर नि.संवत्-2546)

संस्थापक सम्पादक : अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल
सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

कोबा में विशेष शिविर

अहमदाबाद-कोबा (गुज.) : यहाँ श्रीमद् राजचन्द्र आध्यात्मिक साधना केन्द्र कोबा में दिनांक 1 से 3 दिसम्बर 2019 तक विशेष शिविर का आयोजन हुआ।

शिविर में मुख्य रूप से **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** द्वारा तीनों समय प्रोजेक्टर के माध्यम से जगत का स्वरूप एवं चार गति के दु:खों को आध्यात्मिक शैली में समझाया गया।

इस प्रसंग पर केन्द्र के अधिठाता संतश्री आत्मानंदजी सोनी की उपस्थिति के अतिरिक्त पद्मश्री डॉ. कुमारपालभाई देसाई, ब्र.सुजाता ताई कोल्हापुर, ब्र. सुरेशभैया के विशेष प्रवचन का लाभ मिला। प्रात:काल विशेष पूजन-विधान में ब्र. सुरेशभैया, कपिलभैया, अल्कादीदी व जनकदीदी का सहयोग रहा।

समारोह में संस्था के अध्यक्ष श्री नितिनभाई पारीख मुम्बई, डॉ. राजेशभाई सोनी अहमदाबाद व समिति के अध्यक्ष श्री अशोकभाई शाह मुम्बई के अतिरिक्त देश-विदेश से पधारे 450-500 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

द्वितीय वार्षिकोत्सव संपन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ शाश्वतधाम में दिनांक 7 व 8 दिसम्बर को जिनमंदिर का द्वितीय वार्षिकोत्सव संपन्न हुआ, जिसमें डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रचित 24 तीर्थंकर विधान का आयोजन स्व. कन्हैयालालजी दलावत की स्मृति में दलावत परिवार द्वारा हुआ।

इस अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा **Audio Visual** के माध्यम से 'तीन लोक की रचना' विषय पर बहुत रोचक शैली में चार प्रवचन हुए। बालिकाओं के उत्साह को देखकर संजीवजी ने दिनांक 8 दिसम्बर को प्रात: 6 बजे भी विशेष कक्षा ली। साथ ही डॉ. मनीषजी शास्त्री रहली द्वारा समयसार पर मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला। दिनांक 2 से 8 दिसम्बर तक बालिकाओं द्वारा पंचकल्याणकों पर जिनेन्द्र-भक्ति की गई।

कार्यक्रम में आयोजित चौबीस तीर्थंकर विधान के अन्तर्गत किसी प्रकार की सहयोग राशि नहीं रखी गई, अपितु कलश एवं प्रातिहार्य विराजमानकर्ताओं से समयसार एवं मोक्षमार्गप्रकाशक के स्वाध्याय की शर्त रखी गई।

साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 7 दिसम्बर को '**सयलसत्थसुद्धियरं णयचक्कम्**' विषय पर आयोजित गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित मनीषजी कहान जयपुर ने की। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में प्रथम स्थान विकास जैन मुम्बई (शास्त्री द्वितीय वर्ष) ने एवं द्वितीय स्थान अभिषेक जैन केरबना (शास्त्री तृतीय वर्ष) व कपिल जैन खड़ैरी (शास्त्री प्रथम वर्ष) ने प्राप्त किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण द्रव्य जैन बांसवाड़ा (उपाध्याय कनिष्ठ) ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के भूपेन्द्र जैन विदिशा व आकाश हलाज उगार ने किया। आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने एवं ग्रन्थ भेंट गौरवजी उखलकर ने किया।

● दिनांक 8 दिसम्बर को '**रहस्यमयी ग्रन्थ मोक्षमार्गप्रकाशक**' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता श्री विनयजी पापड़ीवाल जयपुर ने की। निर्णायक के रूप में पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर उपस्थित थे। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में प्रथम स्थान दीपम जैन खतौली (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने एवं द्वितीय स्थान दर्शन सिंघई बलेह (शास्त्री प्रथम वर्ष) ने प्राप्त किया। गोष्ठी का मंगलाचरण शाश्वत जैन सागर (उपाध्याय कनिष्ठ) ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के नयन जैन खनियांधाना व हरीश जैन समर्रा ने किया। आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने एवं ग्रन्थ भेंट जिनेन्द्रजी शास्त्री ने किया।

● दिनांक 15 दिसम्बर को '**बोधि-समाधि-निधानं - त्रिपुराणं (पद्म, हरिवंश व आदिपुराण)** ' विषय पर आयोजित गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ ने की। निर्णायक के रूप में पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर उपस्थित थे। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में प्रथम स्थान पवित्र जैन आगरा (शास्त्री द्वितीय वर्ष) ने एवं द्वितीय स्थान विकास जैन भिण्ड (शास्त्री द्वितीय वर्ष) ने प्राप्त किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण हर्षित जैन खनियांधाना (उपाध्याय कनिष्ठ) ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के चेतनप्रकाश जैन गुढाचन्द्रजी व शुभम नाके डासाला ने किया। आभार प्रदर्शन एवं ग्रन्थ भेंट पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

सम्पादकीय –

समयसार : संक्षिप्त सार

6

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

जैनपथप्रदर्शक के संस्थापक सम्पादक आदरणीय पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल द्वारा पूर्व में लिखित क्रमश: प्रकाशित यह संक्षिप्त सार पूर्ण होने तक पाठकों के लाभार्थ नियमित प्रकाशित किया जायेगा।

(गतांक से आगे...)

३. पुण्य-पाप : स्वर्ण-लोहमय बेडियाँ –

आचार्य कुन्दकुन्द शुभ और अशुभ दोनों कर्मों को कुशील कहते हैं। अशुभकर्म को कुशील और शुभकर्म को सुशील मानने वाले अज्ञानीजनों से वे पूछते हैं कि जो कर्म हमें संसाररूप बन्दीगृह में बन्दी बनाता है वह सुशील कैसे हो सकता है?[१] अर्थात् नहीं हो सकता।

जैसे पुरुष को सोने की बेड़ी भी बाँधती है और लोहे की बेड़ी भी बाँधती है, उसी प्रकार शुभ अशुभ कर्म भी जीवों को समान रूप से सांसारिक बन्धन में बाँधते हैं।[२]

दुर्जन पुरुष के संसर्ग की भाँति इन दोनों कुशीलों के साथ राग व संसर्ग करना उचित नहीं है क्योंकि कुशील के साथ संसर्ग एवं राग करने से स्वाधीनता का नाश होता है।[३]

जिनेन्द्र भगवान का यह उपदेश है कि रागी जीव कर्म से बँधता है और वैराग्य को प्राप्त जीव कर्मबन्ध से छूटता है, अतः शुभाशुभ कर्मों में प्रीति करना ठीक नहीं है।[४]

वस्तुतः यहाँ आचार्य कुन्दकुन्द की दृष्टि शुद्धोपयोग पर ही केन्द्रित है, वे शुभाशुभ दोनों ही भावों को एक जैसा संसार का कारण होने से हेय मानते हैं।

कविवर बनारसीदास ने तो इस अधिकार का नाम ही पुण्यपाप-एकत्वद्वार रखा है। उसके अनुसार – पापबन्ध व पुण्यबन्ध – दोनों ही मुक्तिमार्ग में बाधक हैं, दोनों के कटु व मधुर स्वाद पुद्गल हैं, संक्लेश व विशुद्धभाव दोनों विभाव हैं, कुगति व सुगति दोनों संसारमय हैं। इस प्रकार दोनों के कारण रस, स्वभाव और फल-सभी समान हैं। फिर भी न जाने क्यों, अज्ञानी को इनमें अन्तर दिखाई देता है? दोनों आत्मा के स्वरूप को भुलाने वाले हैं, अतः अंधकूप व कर्मबंधरूप हैं, अतः दोनों का ही मोक्षमार्ग में निषेध हैं।[१]

समयसार के हिन्दी-टीकाकार पण्डित जयचंदजी छाबड़ा कहते हैं –

''पुण्य-पाप दोऊ करम, बन्ध रूप दुर मानि।
शुद्ध आतमा जिन लह्यो, नमूँ चरण हित जानि।।[२]

पुण्य व पाप दोनों ही कर्म बन्धरूप हैं, अतः दोनों एक समान दुःखद हैं।''

कविवर बनारसीदासजी ने गुरु-शिष्य-संवाद के रूप में पुण्य-पाप की यथार्थ स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहा है कि जबतक शुभ-अशुभ क्रिया के परिणाम रहते हैं तबतक ज्ञान-दर्शन उपयोग और वचन-काय योग चंचल रहते हैं तथा जबतक ये स्थिर न होवें तबतक शुद्धात्मा का अनुभव नहीं होता। इसलिए दोनों ही क्रियाएँ मोक्षमार्ग का छेद करने वाली हैं, दोनों ही बंध कराने वाली है, दोनों में से कोई भी अच्छी नहीं हैं। इसप्रकार दोनों ही मोक्षमार्ग में बाधक हैं – ऐसा विचार करके शुभ-अशुभ क्रिया का निषेध किया गया है।[३]

इसप्रकार मोक्षमार्ग में पुण्य-पाप का क्या स्थान है, यह बात अत्यन्त स्पष्ट हो गई, फिर भी पापकार्यों से बचने के लिए पुण्य कार्यों की भी अपनी उपयोगिता है – इस बात को दृष्टि से ओझल न करते हुए यथायोग्य विवेचना करते हुए पुण्य के प्रलोभन से बचे और पुण्य कार्यों (शुभभावों) को ही धर्म न समझ लिया जाय – इस बात से भी सावधान रहे।

४. आस्रव तत्व : संसार कारण तत्त्व –

समयसार के आस्रव के प्रकरण में आचार्य कुन्दकुन्द ने संसार के कारणों की मीमांसा करते हुए मुख्य रूप से यह बताया है कि ज्ञानी अर्थात् अविरत सम्यग्दृष्टि जीव के रागादिरूप भावास्रवों का अभाव होने से कर्मों का आस्रव

१. समयसार, गाथा १४५ २. समयसार, गाथा १४६
३. समयसार, गाथा १४७ ४. समयसार, गाथा १५०

१. समयसार नाटक, पुण्य-पाप-एकत्वद्वार, छन्द-६
२. समयसार के पुण्यपापाधिकार की भाषावचनिका का मंगलाचरण, पृष्ठ २४१
३. समयसार नाटक, पुण्य-पाप-एकत्वद्वार, छन्द १२

और बंध नहीं होता; क्योंकि सम्यग्दर्शन मात्र मोक्ष का ही कारण है, बन्ध का कारण नहीं है। अविरत सम्यग्दृष्टि के अर्थात् चतुर्थ गुणस्थान में सम्यग्दर्शन के साथ विद्यमान अप्रत्याख्यानावरण आदि कषायों को उदयजनित जो रागादि भाव होते हैं, उनसे कर्मों का आस्रव व बन्ध होता है, परन्तु उनकी यहाँ गिनती नहीं की गई है; क्योंकि सम्यग्दर्शन की ऐसी अद्भुत महिमा है कि उसके उत्पन्न होने की भूमिका में बध्यमान कर्मों की स्थिति घटकर अन्तःकोड़ा-कोड़ी सागर प्रमाण हो जाती है। चौथे गुणस्थान में ४१ प्रकृतियों का आस्रव तो रुक ही जाता है तथा जो शेष आस्रव-बंध होता है, उसका कारण सम्यग्दर्शन नहीं, बल्कि सम्यग्दर्शन के साथ रहने वाला रागभाव है।

आस्रवभाव के अभाव में द्रव्यप्रत्ययों को बन्ध नहीं कहा है, क्योंकि बंध का मूल कारण तो भावास्रव है।

यहाँ महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह उठाया गया है कि जब ज्ञानगुण के जघन्यभाव को बन्ध का कारण कहा तो फिर ज्ञानी निरास्रव कैसे?

समाधान यह है कि यहाँ ज्ञानगुण के जघन्यभाव का अर्थ है मिथ्यात्वसहित अज्ञानभाव अर्थात् मिथ्यात्वादि के उदय में जब ज्ञान-दर्शन-गुण रागादिमय हो जाते हैं, तब अज्ञानभाव से परिणत वह ज्ञान-दर्शन ही बंध का कारण है। ज्ञानी के उस अज्ञानमय जघन्य भाव का अभाव हो गया है, अतः ज्ञानी के आस्रव नहीं है।

५. संवर तत्त्व : भेदविज्ञान की भावना का सुफल –

भेदज्ञान की भावना से ही शुद्धात्मा की उपलब्धि-आत्मानुभूति होती है और आत्मानुभूति से राग-द्वेष-मोहरूप भावास्रव एवं नवीन द्रव्यकर्मों का निरोध होता है। तथा भावास्रव-द्रव्यास्रव का रुक जाना ही संवर है।

निश्चय से उपयोग उपयोग में है, क्रोधादि में उपयोग नहीं है और क्रोध-क्रोध में ही हैं, उपयोग क्रोध नहीं है। इसी प्रकार आठ प्रकार के कर्म और नोकर्म में भी उपयोग नहीं है और उपयोग में भी कर्म-नोकर्म नहीं है; क्योंकि उपयोग चैतन्य का परिणाम होने से ज्ञानस्वरूप है और क्रोधादि भावकर्म, ज्ञानावरणादि द्रव्यकर्म व शरीरादि नोकर्म है। वे सभी पुद्गल के परिणाम होने से जड़ हैं। अतः उपयोग व क्रोधादि में प्रदेश भिन्न होने से अत्यन्त भेद है। इसप्रकार इनके पारमार्थिक आधार-आधेय सम्बन्ध नहीं है। इसी प्रकार ज्ञानी के दर्शन-ज्ञान उपयोग में स्थित होने से मिथ्यात्व, अज्ञान, अविरति और योग रूप आस्रव का अभाव होता है। आस्रव का अभाव होने से कर्मों का निरोध, कर्मों के निरोध से नोकर्मों का निरोध और नोकर्मों के निरोध में संसार का निरोध हो जाता है।[१]

इस प्रकार यह सिद्ध हुआ है कि आत्मोपलब्धि में मूल कारण भेदज्ञान ही है। भेदज्ञान भाने की प्रेरणा देते हुए आचार्य अमृतचंद्र ने भी यही कहा है कि भेदज्ञान सदैव भाने योग्य है तथा यह भेदज्ञान अखण्ड रूप से तब तक भाना चाहिए जबतक कि ज्ञान परभावों से छूटकर ज्ञान में प्रतिष्ठित न हो जावे।[२]

६. निर्जरा तत्त्व : ज्ञान-वैराग्य की प्रकट सामर्थ्य –

इस अधिकार में पहले तो द्रव्यनिर्जरा व भावनिर्जरा किन जीवों को किसप्रकार होती है – इसका सामान्य वर्णन किया है, पश्चात् ज्ञान और वैराग्य की सामर्थ्य का विस्तृत विवेचन किया है, जिसमें विषय औषधि के रूप में सेवन करने वाले विवेकी वैद्य का और परिस्थितिवश अरुचिपूर्वक मद्यपान करने वाले पुरुष का दृष्टान्त देकर स्पष्ट किया है – जिसप्रकार विषपान करता हुआ वैद्य मरता नहीं है तथा मद्यपान करते अनासक्त पुरुष को नशा नहीं चढ़ता, ठीक उसीप्रकार जो भेदविज्ञानी अनासक्त भाव से कर्म करता है, बन्धन को प्राप्त नहीं होता।

आत्माभिमुख रहने की प्रेरणा देते हुए आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं कि –

''एदम्हि रदो णिच्चं, संतुट्ठो होहि णिच्चमेदम्हि।
एदेण होहि तित्तो सो होहिदि उत्तमं सोक्खं॥२०६॥

हे आत्मन! यदि तू सुख चाहता है तो उस आत्मानुभव में तल्लीन होकर रह, उसी में सदा संतुष्ट रह और उसी में तृप्त हो, और सब इच्छाओं का त्याग कर दे। ऐसा करने से तुझे संवरपूर्वक निर्जरा होगी, जिससे तुझे उत्तम सुख प्राप्त होगा।''

१. समयसार गाथा १८१ से १८३ एवं टीका
२. समयसार कलश, १२६ और १३०

आत्मज्ञान की महिमा करते हुए कहा है कि आत्मा को ही नियम से अपना परिग्रह जानता हुआ ज्ञानी क्या ऐसा कहेगा कि यह परद्रव्य मेरा परिग्रह है? कभी नहीं कहेगा। यदि परद्रव्य को कोई अपना मानेगा तो उस अज्ञानी को अजीव होने की आपत्ति आवेगी, जो संभव नहीं है।

अज्ञानी कर्मों से क्यों बंधता है – इस सम्बन्ध में कहा है कि अज्ञानी कर्मफल की भावना करता है, अतः उसे संसार–परिभ्रमण रूप कर्मफल की प्राप्ति होती है और ज्ञानी जीव कर्म फल की कामना नहीं करता, अतः उसे कर्मफल की प्राप्ति में होनेवाला संसार–परिभ्रमण नहीं होता। इस प्रकार निर्जरा अधिकार में निर्जरा तत्त्व का आध्यात्मिक दृष्टि से विशद विवेचन हुआ है। **(क्रमशः)**

फैडरेशन द्वारा विधान संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ अ.भा. जैन युवा फैडरेशन जयपुर महानगर के तत्त्वावधान में दिनांक 8 दिसम्बर को **24 तीर्थंकर मण्डल विधान** का आयोजन टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक श्रीमंतजी नेज परिवार जयपुर द्वारा किया गया। इस अवसर पर अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** द्वारा **विधान की जयमाला** पर प्रवचन का लाभ मिला।

दिनांक 15 दिसम्बर को पण्डित रमेशचंदजी शास्त्री 'दाऊ' द्वारा पुत्र के विवाहोपलक्ष्य में 24 तीर्थंकर मण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस प्रसंग पर डॉ. भारिल्ल द्वारा **विधान की जयमाला** पर प्रवचन हुए।

दिनांक 22 दिसम्बर को द्रव्यसंग्रह विधान का आयोजन टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक श्री शोभालालजी शास्त्री परिवार जयपुर द्वारा किया गया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा '**भरत का अन्तर्द्वन्द्व**' पर विशेष प्रवचन का लाभ मिला।

तीनों ही विधानों के समय **डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर** द्वारा अनेक पद्यों की मार्मिक व्याख्या की गई।

कार्यक्रम में स्थानीय स्नातकों के अतिरिक्त अनेक साधर्मीजन भी उपस्थित थे।

ज्ञातव्य है कि इसी प्रसंग पर श्रीमंतजी एवं शोभालालजी शास्त्री के बच्चों का जैनत्व संस्कार **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** द्वारा णमोकार मंत्र सुनाकर किया गया।

आवश्यकता

श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में कैन्टीन संचालन हेतु कैन्टीन काम के जानकार व्यक्ति की आवश्यकता है।

संपर्क करें – 9758643202, 8233372891

समयसार विद्यानिकेतन के बढते चरण...

सभी प्रवेशार्थी ध्यान दें

श्री महावीर कुन्दकुन्द कहान शिक्षा प्रसार समिति द्वारा संचालित श्री समयसार विद्यानिकेतन, आत्मायतन ग्वालियर (म.प्र.) का प्रथम सत्र अपनी अनेक विशेष उपलब्धियों के साथ पूर्णता की ओर है, जिसका द्वितीय एवं नवीन सत्र 1 अप्रैल 2020 से प्रारम्भ होगा, जिसमें कक्षा 6 में 70% अंकों के साथ उत्तीर्ण तत्त्वरुचिवंत जैन आत्मार्थी छात्रों का कक्षा 7वीं में (**CBSE** बोर्ड से) 10 छात्रों का साक्षात्कार के माध्यम से चयन किया जाना है; अत: जो भी प्रवेश इच्छुक छात्र फार्म भरना चाहते हैं, वे निम्नांकित नम्बरों पर संपर्क करें –

9893224022 (निर्देशक–शुद्धात्मजी शास्त्री), 7023245776 (प्रदीपजी), 6263098138 (प्रवीणजी), 9039365001 (प्राचार्य), 0751–4076810 (कार्यालय)।

दिनांक 1 फरवरी तक प्रवेश फार्म प्राप्त होने पर ही साक्षात्कार हेतु सूचना वाट्सएप नम्बर पर भेजी जा सकेगी। साक्षात्कार हेतु अनुमानित तिथि 21 से 24 फरवरी, 2020 है।

नोट :– प्रवेश फार्म अपूर्ण होने की स्थिति में निरस्त कर दिया जायेगा। प्रवेश शिविर की सूचना आदान–प्रदान हेतु अलग से वाट्सएप ग्रुप निर्मित किया जायेगा।

पत्र व्यवहार का पता :– पण्डित धनेन्द्र सिंघल शास्त्री (श्री समयसार विद्यानिकेतन), **C/o** रजत स्टोर्स, यूनियन बैंक ए.टी.एम. के पास, किलागेट चौराहा, लोहा मण्डी, ग्वालियर–474003 (म.प्र.)

प्रशिक्षण शिविर प्रशिक्षक कार्यशाला संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 25 से 28 दिसम्बर तक प्रशिक्षण शिविर के प्रशिक्षक अध्यापकों की विशेष कार्यशाला संपन्न हुई।

इस प्रसंग पर प्रतिदिन तीन सत्रों का आयोजन हुआ, जिसमें प्रशिक्षण संबंधी नवीन प्रविधि पर विशेष अभ्यास कराया गया।

दिनांक 25 दिसम्बर को उद्घाटन सभा एवं दिनांक 28 दिसम्बर को समापन समारोह की अध्यक्षता अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** ने की। समापन समारोह में पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा ने शिविर संबंधी प्रकाश डाला तथा अन्त में डॉ. भारिल्ल का अध्यक्षीय उद्बोधन होने के पश्चात् सभी 30 अध्यापकों को प्रमाण–पत्र वितरित किए गए।

संपूर्ण कार्यक्रम **पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई** के संयोजकत्व में संपन्न हुआ।

ज्ञातव्य है कि इस अवसर पर प्रतिदिन रात्रि में **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** की लेखनाधीन नवीनतम कृति '**भरत का अन्तर्द्वन्द्व**' पर हुए प्रवचनों का विशेष लाभ प्राप्त हुआ।

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ के छात्र ध्यान दें

पत्राचार पाठ्यक्रम की दिसम्बर 2019 के अंतिम सप्ताह में होने वाली द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षाओं के पाठ्यक्रम का विवरण निम्नानुसार है; परीक्षार्थी इसी के अनुसार तैयारी करें -

द्विवर्षीय विशारद परीक्षा की सैकेण्ड सेमेस्टर परीक्षा

प्रथम वर्ष - 1. वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग 2
2. वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग 3

द्वितीय वर्ष - 1. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 2
2. धर्म के दशलक्षण + भक्तामर स्तोत्र

त्रिवर्षीय सिद्धांत विशारद परीक्षा की सैकेण्ड सेमेस्टर परीक्षा

प्रथम वर्ष - 1. रत्नकरण्ड श्रावकाचार
2. रामकहानी + आप कुछ भी कहो

द्वितीय वर्ष - 1. मोक्षमार्गप्रकाशक पूर्वार्द्ध (1 से 5 अध्याय)
2. नयचक्र-पूर्वार्द्ध (निश्चय व्यवहार)
3. हरिवंशकथा + भ.महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ

तृतीय वर्ष - 1. मोक्षमार्गप्रकाशक उत्तरार्द्ध (6 से 9 अध्याय)
2. नयचक्र-उत्तरार्द्ध (द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक नय प्रकरण)
3. शलाका पुरुष (सम्पूर्ण)

नोट : सभी परीक्षार्थियों को उनके प्रश्नपत्र केन्द्र/उनके पते पर दिसम्बर के तृतीय सप्ताह तक डाक द्वारा भेज दिये जायेंगे। यदि 25 दिसम्बर तक भी पेपर न मिले तो जयपुर कार्यालय से संपर्क करें।

- नीशू शास्त्री (प्रबंधक) 7742364541

साहित्यदीप प्रज्ञा सम्मान प्राप्त किया

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक **पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री 'ओजस्वी' आगरा** को फेसबुक समूह 'साहित्यदीप' द्वारा लगभग 2 महीने और 265 प्रतिभागियों के बीच अनेक चरण में अनेक विधाओं में हुई प्रतियोगिता में काव्य कुशलता, भाषा सौष्ठव एवं शुद्ध व परिष्कृत हिन्दी के प्रयोग के आधार पर सम्मान प्रदान किया गया।

इस आयोजन में देशभर से 70 से अधिक रचनाकार आये। तीन पुस्तकों के विमोचन के साथ ही गणतंत्रजी ने अपना कविता संग्रह अन्तर्ध्वनि भी सम्मानित अतिथियों को भेंट किया। समारोह में काव्यपाठ के दौरान हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिये आह्वान करते हुए हिन्दी को समर्पित गीत पढा।

समारोह की आयोजक समिति द्वारा प्रकाशित साझा काव्य संग्रह 'काव्य निहारिका' में चुनिन्दा 101 रचनाओं में भी गणतंत्रजी को स्थान प्राप्त हुआ।

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

शीतकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र-2020

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
रविवार 26 जनवरी 2020	1. बालबोध पाठमाला भाग-1 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड -प्रथम वर्ष
सोमवार 27 जनवरी 2020	1. बालबोध पाठमाला भाग-2 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद प्रथम खण्ड -द्वितीय वर्ष 10. विशारद द्वितीय खण्ड -प्रथम वर्ष
मंगलवार 28 जनवरी 2020	1. बालबोध पाठमाला भाग-3 (मौखिक) 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-3 3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड -द्वितीय वर्ष

नोट - (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें। **- नीशू शास्त्री, प्रबंधक-परीक्षा बोर्ड (7742364541)**

मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ

3 –डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

कुछ दिनों के बाद जब युद्ध में सहयोग माँगने दुर्योधन और अर्जुन एक साथ कृष्ण के पास पहुँचे तो उन्होंने कहा कि **एक ओर निहत्था (बिना हथियार का) अकेला मैं** और **दूसरी ओर हथियारबंद मेरी पूरी सेना।**

''बोलो दुर्योधन - क्या चाहिये - मैं या सेना?''

दुर्योधन ने कहा -''युद्ध तो हथियारों और सेना से ही जीते जाते हैं। अत: हमें तो हथियारबंद सेना ही दे दीजिये।

अकेले आपका क्या करेंगे हम? वह भी निहत्थे! आप तो उपदेश ही देंगे। सो हमने आपका उपदेश तो बहुत सुन लिया। कोरी बातों से क्या होता है ?''

फिर अर्जुन से पूछा -''बोलो तुम्हें क्या चाहिये?''

अर्जुन बोला -''**अब मुझे चुनाव का अधिकार ही कहाँ है;** क्योंकि सेना और हथियार तो दुर्योधन ने ले ही लिये। मेरे पल्ले तो अब अकेले निहत्थे आप ही हैं।

हाँ, एक बात अवश्य है कि यदि मुझे चुनाव का अवसर मिलता तो भी मैं अकेले आपको ही चुनता।''

लोग कहते हैं कि अकेली बातों से क्या होता है, पर मैं कहता हूँ सब कुछ बातों से ही होता है।

विचारों का आदान-प्रदान बातों से ही तो होता है। सद्धर्म का प्रचार-प्रसार भी बातों से ही होता है। लोक में कहा जाता है कि बोलनेवाले के भूंगड़े (नमकीन चने) भी बिक जाते हैं और नहीं बोलने वाले का मालमसाला भी पड़ा रहता है। बातों (वाणी) का महत्व कम मत कीजिये। आदमी और पशु में मात्र वाणी का ही तो अन्तर है।

पाण्डवों की जीत का श्रेय भी तो युद्ध में मात्र बातें करने वाले श्रीकृष्ण को ही दिया जाता है। उन्होंने महाभारत में क्या किया? मात्र बातें ही तो की थीं। गीता का सम्पूर्ण उपदेश युद्ध के मैदान में ही तो हुआ था। (क्रमश:)

'भरत का अन्तर्द्वन्द्व' पर -

डॉ. भारिल्ल के विशेष प्रवचन

चतुर्थ गुणस्थानवर्ती अविरत सम्यग्दृष्टि श्रावक का अन्तर्बाह्य जीवन कैसा होता है - इस विषय पर प्रवचनों में **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** अनेक बार चर्चा करते रहे हैं और इस संबंध में लिखने की भावना भी व्यक्त करते रहे। उसी फलस्वरूप '**भरत का अन्तर्द्वन्द्व**' महाकाव्य का शुभारम्भ होकर चार अध्याय लिखे जा चुके हैं। इन पर आपके विशेष प्रवचन दिनांक 15 दिसम्बर, 22 दिसम्बर को संपन्न विधानों के अवसर पर एवं दिनांक 25 से 27 दिसम्बर तक प्रशिक्षण शिविर प्रशिक्षक कार्यशाला के अवसर पर सम्पन्न हुए। टोडरमल महाविद्यालय के सभी विद्यार्थियों के अतिरिक्त अनेक साधर्मियों ने इसका लाभ प्राप्त किया।

त्रिदिवसीय चरणानुयोग शिविर संपन्न

पिड़ावा (राज.) : यहाँ आदिनाथ जिनालय एवं वीतराग-विज्ञान चैत्यालय में दिनांक 24 से 27 दिसम्बर तक चरणानुयोग शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर द्वारा प्रात: भावपाहुड एवं सायंकाल नियमसार पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त दोपहर में 'अष्टमूल गुणों के पालन व पाँच अभक्ष्यों के त्याग से स्वास्थ्य रक्षा' विषय पर प्रोजेक्टर के माध्यम से विशेष सत्र का आयोजन हुआ।

शिविर का आयोजन श्री धनसिंहजी, कैलाशसिंहजी व प्रकाशसिंहजी जैन द्वारा किया गया, जिसमें लगभग 250 साधर्मियों ने लाभ लिया।

- धनसिंह जैन, पिड़ावा

अर्हं पाठशाला की 3डी वर्कशॉप संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 28 से 30 दिसम्बर तक अर्हं पाठशाला की त्रिदिवसीय 3डी कार्यशाला संपन्न हुई।

दिनांक 28 दिसम्बर को 'वास्तविक जीवन व धर्म' पर बात करते हुए पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने '**धर्म : जिन्दगी के साथ भी जिन्दगी के बाद भी**' विषय पर, विदुषी प्रतीति पाटील ने '**वास्तविक जीवन एवं धर्म में सामन्जस्य**' विषय पर एवं पण्डित सर्वज्ञजी भारिल्ल ने '**आओ जुड़ें धर्म से**' विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

दिनांक 29 दिसम्बर को '**क्यों जुड़ें धर्म से**' विषय पर अपने विचार रखते हुए इन्टरनेशनल मोटिवेशनल स्पीकर पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने जनसामान्य को संबोधित किया।

दिनांक 30 दिसम्बर को पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल की स्मृति में उनकी कृतियों का स्मरण करते हुए अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने '**सुखी जीवन का आधार : सहजता**' विषय पर, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील ने '**कभी सोचा है - इन भावों का फल क्या होगा?**' विषय पर एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा ने '**जीवन जीने की कला - विदाई की बेला**' विषय पर अपना मार्मिक वक्तव्य प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का संयोजन आकाशजी शास्त्री अमायन एवं संचालन अर्पितजी शास्त्री ने किया।

तू है यह सत्य है, तू रहेगा यह तथ्य है, इतना पर्याप्त है

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री–टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

इसी आलेख से –

जब किसी बात पर मेरा कोई जोर नहीं, कोई कंट्रोल नहीं तब जो मुझे न मिला या मिलकर नष्ट हो गया, कोई छीन ले गया, लूट ले गया, ठग गया, धोखा दे गया तो किस बात का अफसोस?

तेरे हाथ में है क्या, मलाल किस बात का?

मुझे यह मानव जीवन मिला, न मिलता तो क्या होता?

मानव जीवन में अच्छा देश, अच्छा कुल, अच्छे लोग, अनुकूल संयोग एवं सामग्री प्राप्त हुई; यदि ऐसा न भी होता तो क्या होता?

जन्मजात जो न भी मिल पाया वह बाद में उपलब्ध हो गया। कठोर परिश्रम और अनेक प्रयासों के बावजूद यह सब भी उपलब्ध न होता तो मैं क्या कर सकता था?

जो कुछ भी मुझे मिला वह अब भी मेरे पास है, यह क्या कम बात है? यदि वह भी न टिकता तो कौन क्या कर पाता?

जब किसी बात पर मेरा कोई जोर नहीं, कोई कंट्रोल नहीं तब जो मुझे न मिला या मिलकर नष्ट हो गया, कोई छीन ले गया, लूट ले गया, ठग गया, धोखा दे गया तो किस बात का अफसोस?

किसी से क्या शिकवा, वह ऐसा न करता तो कोई और करता।

यदि वह मेरे पास टिकना होता तो ऐसा कैसे होता?

यदि मुझे और कुछ मिलना होता तो दुनिया में दुनियाभर की दौलत तो बिखरी पड़ी है, वह मुझे मिल न जाती?

फिर मलाल किस बात का?

जो कुछ अभी उपलब्ध है वह भी कब तक टिकेगा, कब खो जाएगा, क्या यह सब तेरे हाथ में है?

अब और कुछ न मिलेगा ऐसा भी तो नहीं है!

जो मिला सो ठीक, जो टिका सो अच्छा, जो गया सो उत्तम।

कुछ न भी मिलता तो क्या लोग जीते नहीं हैं?

यह बात हर वस्तु पर लागू होती है, फिर चाहे वह विद्या हो, बुद्धि हो, संस्कार हों, दौलत हो, प्रसिद्धि हो, सत्ता हो, स्वास्थ्य हो, आयु हो, सौन्दर्य हो, स्नेह हो, मित्र–परिजन या रिश्ते हों, खुशी या संतुष्टि हो।

तू है यह सत्य है, तू रहेगा यह तथ्य है, इतना पर्याप्त है।

ज्ञानगोष्ठी एवं पंचास्तिकाय विधान संपन्न

सिद्धायतन–द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ तलहटी में स्थित तीर्थधाम सिद्धायतन में दिनांक 8 से 12 दिसम्बर तक आध्यात्मिक ज्ञानगोष्ठी एवं पंचास्तिकाय मण्डल विधान संपन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रात: एवं दोपहर में ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्' के अतिरिक्त रात्रि में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित गुलाबचंदजी बीना, पण्डित मनोजजी शास्त्री करेली द्वारा प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अजितजी मड़ावरा, पण्डित सुरेशचंदजी टीकमगढ, पण्डित रतनचंदजी शास्त्री भोपाल, पण्डित कमलेशजी शास्त्री टीकमगढ आदि का भी समागम प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम में आयोजित विधान के आमंत्रणकर्ता श्री महेन्द्रकुमारजी गंगवाल एवं ध्वजारोहणकर्ता श्री संजयकुमार संदीपकुमारजी परिवार जबलपुर रहे। विधि–विधान के समस्त कार्य पण्डित अभयजी देवलाली के निर्देशन में पण्डित शुभमजी शास्त्री ज्ञानोदय, पण्डित प्रशांतजी शास्त्री, पण्डित नितिनजी जैन सिद्धायतन के सहयोग से संपन्न हुए।

संपूर्ण कार्यक्रम सिद्धायतन ट्रस्ट के ट्रस्टियों, सहयोगियों एवं पंकजजी जैन व रोहितजी जैन के सहयोग से संपन्न हुए। कार्यक्रम का संचालन पण्डित शुभमजी शास्त्री ज्ञानोदय द्वारा किया गया।

ज्ञातव्य है कि गोष्ठी के अन्तर्गत विशेष मीटिंग में सिद्धायतन का 20वाँ स्थापना वर्ष दिनांक 16 से 19 जुलाई 2020 तक मनाने का निर्णय लिया गया।

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित

आठवाँ वार्षिक महोत्सव

(शुक्रवार, दिनांक 28 फरवरी से रविवार 1 मार्च, 2020 तक)

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा फरवरी 2012 में आयोजित **पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आठवाँ वार्षिक महोत्सव दिनांक 28 फरवरी से 1 मार्च 2020 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।**

इस त्रिदिवसीय महोत्सव में **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** आदि अनेक विद्वानों का प्रवचन, प्रौढ कक्षा व गोष्ठियों के माध्यम से अपूर्व लाभ प्राप्त होगा।

इस मंगल अवसर पर पधारने हेतु
आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

शाश्वतधाम में गोष्ठियाँ संपन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ शाश्वतधाम में मंदिर के द्वितीय वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिनांक 7 दिसम्बर को पण्डित टोडरमलजी की 300वीं जन्मजयंती के उपलक्ष्य में शाश्वत बालिकाओं द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक के विविध अध्यायों पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं मुख्य अतिथि श्री अजितजी जैन बड़ौदा व डॉ. मनीषजी शास्त्री रहली थे।

गोष्ठी में खुशबू जैन खड़ैरी, अनुभूति जैन घुवारा, चारुल जैन करेली, खुशबू जैन केसली व शालिनी जैन भिण्ड ने वक्तव्य प्रस्तुत किया। गोष्ठी का संचालन अनुभूति जैन रहली ने किया।

● दिनांक 8 दिसम्बर को स्थानीय स्नातक विद्वानों द्वारा ग्रन्थाधिराज समयसार के अनेक बिन्दुओं के आधार पर ज्ञानवर्धक गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं मुख्य अतिथि डॉ. मनीषजी शास्त्री रहली व श्री महिपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा थे।

गोष्ठी में पण्डित खेमचंदजी शास्त्री, पण्डित ऋषभजी शास्त्री, डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित तपिशजी शास्त्री, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री व डॉ. ममता जैन ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। गोष्ठी का संयोजन एवं संचालन डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री ने किया।

विशेष सूचना

अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल की स्मृति में जैनपथप्रदर्शक का विशेषांक शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है; अत: सभी पाठकों से निवेदन है कि उनसे संबंधित फोटो, लेख, संस्मरण आदि वाट्सएप या ईमेल द्वारा अवश्य भेजें।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर
मोबाइल - 9660668506
Email - ptstjaipur@yahoo.com

पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त

श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महा. के स्नातक पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर ने '**वर्तमान परिवेश में जैन युवा वर्ग का जैनधर्म के प्रति दृष्टिकोण : एक अध्ययन**' विषय पर देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर से श्रीमती सुलभा काकिर्डे (सह-प्राध्यापक - श्री अटलबिहारी वाजपेयी कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर) के निर्देशन में शोध कार्य कर **Ph.D.** की उपाधि प्राप्त की।

टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी की 300वीं जन्म जयंती के उपलक्ष्य में उनकी अद्वितीय कृति मोक्षमार्गप्रकाशक का ऑनलाइन स्वाध्याय करने का अपूर्व अवसर।

यह स्वाध्याय पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध है।

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com

प्रकाशन तिथि : 28 दिसम्बर 2019

प्रति,